MPPSC Paper 1 Rise of Regional Powers Malwa 001

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग प्रारम्भिक परीक्षा पेपर एक, सामान्य अध्यान में क्षेत्रिय शक्तियों के उदे, जैसे माल्वा और अवंती और भारतिय इतिहास में उनकी भूमिका को शामिल किया गया है। एक आ माल्वा, क्षेत्रिय शक्ति और एतिहासिक महत्व। माल्वा, जो मध्यभारत में स्थित है, अपनी रणनीतिक स्थिती और संस्कृती, राजनीती और अर्थविवस्था में योगदान के कारण भारतिय इतिहास में एक महत्वपूर्म क्षेत्र रहा है। मुख्य एतिहासिक काल प्राचीन काल माल्वा अवन्ती महाजनपद का हिस्सा था, जिसे बोध्ध ग्रंतों में उलेखित सोलह महाजनपदों में से एक के रूप में जाना जाता है। यह क्षेत्र उज्ञेनी और महिश्मती, दक्षिन माल्वा में विभाजित था। उज्ञेनी वियापार, शिक्षा और धर्म का एक प्रमुख केंडर था। मध्यकाल, परमारवन्श के दोरान, माल्वा कला, साहित्य और मंदिरवास्तुकला का केंडर बना। राजा भोज इस वंश के प्रमुख शासक थे, जो संस्कृत साहित्य, वास्तुक्ला और विज्ञान के सत्रक्षन के लिए प्रसिद्ध थे। माल्वा पर दिली सल्तनत ने आकरमन किया और अपना नियंत्रन स्थापित किया। पंद्रवी शताबदी में, माल्वा सल्तनत एक स्वतंतर राज्य के रूप में उब्री, जिसकी राजधानी मांडू थी। आदुनिक काल शेत्र को मुगलों ने अपने सामराज्य में शामिल किया, जहां यह प्रशासन में महत्वपूर्म भूमिका निभाता था। मुगल सामराज्य के पतन के बाद, मराठाओं ने माल्वा पर कभजा कर लिया और इसे अपने शासन का एक महत्वपूर्म हिस्सा बनाया। सांस्कृतिक योगदाम कला और वास्तुकला मांडू किला, जहाज महल और अन्य मंदिर और महल माल्वा सल्तनत की वास्तुकला में प्रगती को दर्शाते हैं। साहित्य राजा भोज का योगदाम, जैसे सम्रांगन, सूत्रधार और राजमार्थंड जोतिश पर अद्वितिय था। भारतिय इतिहास में महत्व गुप्त सामराज्य, दिली सल्तनत, मुगल सामराज्य और मराठाओं जैसे सामराज्यों के बीच सत्ता संघर्ष में एक प्रमुख भूमिका। वियापार मार्गों पर स्थित होने के कारण इसका सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व। दो अवन्ति, क्षेतरिय शक्ति और एतिहासिक महत्व अवन्ति प्राचीन भरतिय सब्भेता के दोरान सोलह महाजन पदों में से एक था और यह वैदिक काल में एक महत्वपूर्म क्षेतर था। मुख्य विशेष्टाय भौगोलिक स्थिति आदुनिक पश्चिमी मध्यप्रदेश में विस्ट्रित प्रमुक शेहरों में उजेनी और महिश्मती शामिल थे। राजनीतिक महत्व अवन्ति पर शुरुवात में प्रद्योत वंश का शासन था और बाद में यह मगद सामराज्य का हिस्सा बन गया। यह मगद सामराज्य का प्रमुक प्रतिद्वन्द्वी था जब तक इसे मगद में शामिल नहीं कर लिया गया। बौध धर्म और जैन धर्म में भूमिका उजेनी बौध और जैन शिक्षाओं का एक प्रमुक केंद्र था। समराट अशोक उजेनी के राज्यपाल थे, जो बाद में मौरे सामराज्य के समराट बने। जैन ग्रंथों में अवन्ती को धार्मिक गतिविदियों के एक प्रमुक स्थान के रूप में संदर्भित किया गया है। आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व अवन्ती दक्षिन अपत वियापार मार्ग पर स्थित होने के कारण एक प्रमुक वियापार केंद्र था, जो उत्तर और दक्षिन भारत को जोड़ता था। उजेनी खगोल विज्ञान का एक केंद्र बना, जिसमें वराह महिर जैसे विद्वानों का योगदान रहा। उजेन कुम्ब मेला प्राचीन काल से सांस्कृतिक परंपरा का हिस्सा रहा है। माल्वा और अवन्ती की तुलना

पहलू माल्वा अवन्ती समयकाल, मध्यकाल और प्रारंभिक, आधुनिक काल में प्रमुक, महाजनपद काल में प्रमुक राजधानी मांडू, उजेन उजेनी, महिश्मती राजनीतिक प्रभाव पर्मारवंश, माल्वा सल्तुनत, मराठा प्रद्योतवंश, मगध सामराज्य सांस्कृतिक महत्व साहित्य, वास्टुक्ला, वियापार मार्ग बाध धर्म, जैन धर्म, कागोल विज्यान, वियापार आर्तिक भूमिका प्रमुक वियापार केंदर और सांस्कृतिक केंदर प्रमुक वियापार मार्ग, दक्षिनापद धर्मिक भूमिका हिंदू और इस्लामी वास्टुक्ला का योगदान बाध और जैन धर्मका केंदर

सारांश (Summary)

1. मालवा*:* क्षेत्रीय शक्ति और ऐतिहासिक महत्व

मालवा, मध्य भारत का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक क्षेत्र, **रणनीतिक स्थिति, संस्कृति, राजनीति और अर्थव्यवस्था** में योगदान के कारण भारतीय इतिहास में विशेष स्थान रखता है।

(A) प्राचीन काल:

- मालवा, अवंति महाजनपद का हिस्सा था।
- प्रमुख नगर: उज्जयिनी (वर्तमान उज्जैन) और माहिष्मती।
- व्यापार, शिक्षा और धर्म का प्रमुख केंद्र।

(B) मध्यकाल:

- परमार वंश के दौरान, मालवा **कला, साहित्य और मंदिर वास्तुकला** का प्रमुख केंद्र बना।
- राजा भोज: संस्कृत साहित्य, विज्ञान और स्थापत्य कला में महत्वपूर्ण योगदान।
- मालवा पर **दिल्ली सल्तनत ने आक्रमण किया और नियंत्रण स्थापित किया।**
- *15* वीं शताब्दी में, मालवा सल्तनत एक **स्वतंत्र राज्य** बना, जिसकी राजधानी **मांडू** थी।

(C) आधुनिक काल:

- मुगलों ने मालवा को अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- मराठाओं ने बाद में मालवा पर कब्जा कर इसे अपने शासन का महत्वपूर्ण भाग बनाया।

(D) सांस्कृतिक योगदान:

- कला और स्थापत्य: जहाज महल, मांडू किला, मंदिर और महल।
- साहित्य: राजा भोज के योगदान – **समरांगण सूत्रधार और राजमार्तंड (ज्योतिष पर अद्वितीय ग्रंथ)।**
- व्यापार मार्गों पर स्थित होने से आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण।

---

2. अवंति*:* क्षेत्रीय शक्ति और ऐतिहासिक महत्व

(A) भौगोलिक स्थिति:

- आधुनिक पश्चिमी मध्यप्रदेश में फैला हुआ क्षेत्र।
- प्रमुख नगर: उज्जयिनी और माहिष्मती।

(B) राजनीतिक महत्व:

- प्रारंभ में प्रद्योत वंश का शासन था, बाद में मगध साम्राज्य का हिस्सा बन गया।
- मगध साम्राज्य का प्रमुख प्रतिद्वंद्वी जब तक इसे मगध में शामिल नहीं कर लिया गया।

(C) बौद्ध और जैन धर्म में भूमिका:

- उज्जैन बौद्ध और जैन शिक्षाओं का प्रमुख केंद्र था।
- सम्राट अशोक उज्जैन के राज्यपाल थे, बाद में मौर्य साम्राज्य के सम्राट बने।
- जैन ग्रंथों में अवंति को धार्मिक गतिविधियों का केंद्र बताया गया है।

(D) आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व:

- **दक्षिणापथ व्यापार मार्ग पर स्थित होने के कारण प्रमुख व्यापार केंद्र।**
- **खगोल विज्ञान का केंद्र:** वराहमिहिर जैसे विद्वानों का योगदान।
- **उज्जैन कुम्भ मेला:** प्राचीन काल से सांस्कृतिक परंपरा का हिस्सा।

---

3. मालवा और अवंति की तुलना

विशेषता	मालवा	अवंति
समयकाल	मध्यकाल और आधुनिक काल	महाजनपद काल
राजधानी	मांडू, उज्जैन	उज्जयिनी, माहिष्मती
राजनीतिक प्रभाव	परमार वंश, मालवा सल्तनत, मराठा	प्रद्योत वंश, मगध साम्राज्य
सांस्कृतिक योगदान	साहित्य, वास्तुकला, व्यापार मार्ग	बौद्ध धर्म, जैन धर्म, खगोल विज्ञान
आर्थिक भूमिका	प्रमुख व्यापार और सांस्कृतिक केंद्र	प्रमुख व्यापार मार्ग, दक्षिणापथ
धार्मिक प्रभाव	हिंदू और इस्लामी वास्तुकला	बौद्ध और जैन धर्म का केंद्र

प्रश्नमंजूषा (Quiz)

1. मध्यकाल में मालवा का प्रमुख शासक कौन था, जिसने साहित्य और वास्तुकला में योगदान दिया?

☑ **राजा भोज**
✕ सम्राट अशोक
✕ हर्षवर्धन
✕ महाराणा प्रताप

2. उज्जयिनी और माहिष्मती किस महाजनपद के प्रमुख नगर थे?
☑ **अवंति**
✕ मगध
✕ कौशाम्बी
✕ काशी

3. मालवा सल्तनत की राजधानी कौन-सा नगर था?
☑ **मांडू**
✕ ग्वालियर
✕ उज्जैन
✕ इंदौर

4. खगोल विज्ञान के क्षेत्र में वराहमिहिर का योगदान किस क्षेत्र से संबंधित था?

☑ **अवंति (उज्जैन)**
✕ मालवा
✕ मगध
✕ वल्लभी